गाँधी का अहिंसा एवं विश्वशांति संबंधी चिंतन

डॉ0 माईकल
स्नातकोत्तर, गाँधी विचार विभाग
तिलका मांझी भागलपुर, विश्वविद्यालय
भागलपुर, बिहार
Email:- drmaikalbh@gmail. Com

सारांश

महात्मा गाँधी बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी थे। जिस तरह हिमालय का आकर्षण दुर्निवार है, उसी तरह महात्मा गाँधी का भी। गाँधी पिछली शताब्दी के हिमालय थे। उन्होंने न केवल भारतीय, अपितु अंतर्राष्ट्रीय जनजीवन को अपने धवल स्पर्श से अनुल्लंध्य उद्दतता प्रदान की थी। महात्मा गाँधी संत थे, लेकिन धर्मोपदेशक नहीं थे। वे राजनीतिक में थे, लेकिन सत्ता को नापसंद करते थे। उन्होंने अनेक संगठन बनाये, पर किसी भी संघठन को अपना गुलाम नहीं बनाया। सत्य और अहिंसा तथा विश्व शान्ति संदेश के रूप में ही नहीं प्रत्युत महान विचारक के रूप में भी महात्मा गाँधी का विश्व के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान है। गाँधी जी के लिए सत्य सर्वप्रधान सिद्धांत है। उनका सारा जीवन सत्य के साथ किया गया प्रयोग है। उनके विचार में सत्य ही ईश्वर है, इसलिए व्यक्ति का समस्त गतिविधि सत्य पर केन्द्रित होना चाहिए सर्वोदय विचार के पालन के लिए सत्य का पालन आवश्यक है। गाँधी ने कहा था कि हिंदुस्तान का अर्थ है– सदियों से अहिंसक सिद्धान्त का उच्चघोष और उपदेश करने वाला। इसे पश्चिम को अहिंसा धर्म सीखना है। गाँधी उन्नीसवीं सदी में पैदा हुए थे। बीसवीं सदी एक महानायक बने। बीसवीं सदी की समाप्ती पर बाजारवाद के वैश्विक विस्तार के कारण गाँधी जी अपने ही देश के बौद्धिकों द्वारा अप्रासंगिक कहे जाने लगे, परन्तु इक्कीसवीं सदी के इस प्रथम दशक में ही आतंकवादी त्रासदी और वैश्विक आर्थिक मंदी से उत्पन्न संकट के कारण पश्चिमी राष्ट्रों में गाँधी अचानक शाश्वत प्रासंगिक माने जाने लगे हैं। दुनिया उस ओर लौटती दिखाई दे रही है, जहां से चली थी, जिस ओर गाँधी ने इंगित किया था। बुद्ध ने कहा था कि संवाद तब तक करो, जब तक समाधान न निकाल जाए। समयक् दर्शन ही अब टिकाऊ दर्शन माना जाने वाला है। गाँधी, यहीं से शुरू होने का नाम है। यदि इस संसार को जीवित रहना है और आपस की लड़ाई से टुकड़े–टुकड़े नहीं होना है तो उसे गांधीजी की विचारधारा के अनुसार ही चलना होगा, जो भारत के लिए ही नहीं, सारी दुनिया के लिए है। गाँधी के विचार व आदर्श शाश्वत हैं। इन्हीं के मार्ग पर चलकर एक आदर्श समाज की रचना करने में सफल होंगे।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 06.06.2020
Approved: 26.09.2020

डॉ0 माईकल

गाँधी का अहिंसा एवं विश्वशांति संबंधी चिंतन

RJPP 2020,
Vol. XVIII, No. II,
pp.135-142
Article No. 015

Online available at *:*
https://anubooks.com/?page_id=6391

डॉ0 माईकल

प्रस्तावना

गाँधी का अविर्भाव मानव जाति के लिए एक अभूतपूर्व घटना हुई। गाँधी न अवतार थे, न देवता। वे हमारी तरह के प्राणी थे, जो गुजरात के एक उच्च मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए थे तथा अपनी सूझ–बुझ त्याग तथा चरित्र व नैतिक बल से उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को शान्ति, सत्य और अहिंसा का एक नया मार्ग दिया। अल्बर्ट आइन्स्टीन के शब्दों में, "गाँधी जी जनता के ऐसे नेता थे, जिसे किसी बाह्य सत्ता की सहायता प्राप्त नहीं थी। वह एक ऐसे राजनीतिज्ञ थे, जिसकी सफलता न चालाकी पर आधारित थी और न किसी शैल्पिक उपाय के ज्ञान पर, बल्कि उनके व्यक्तित्व की दूसरों को कायल कर देने की शक्ति पर आधारित थी। वह एक ऐसे विजयी योद्धा थे, जिसने बल प्रयोग का सदा उपहास किया। वह बुद्धिमान, दृढ़ संकल्पी, नम्र और अडिग निश्चय के व्यक्ति थे। उन्होंने सारी ताकत अपने देशवासियों को उठाने और उनकी दशा सुधारने में लगा दी। वह एक ऐसे व्यक्ति थे, जिसने यूरोप की पाशविकता का सामना मानवीय यत्न के साथ किया और इस प्रकार सदा के लिए सबसे ऊँचे स्थान पार गए। आने वाली पीढ़ियाँ शायद मुश्किल से यह विश्वास कर सकेंगी कि गाँधी जैसा हाड़–मांस का पुतला कभी इस धरती पर हुआ होगा। गाँधी के चिंतन में सिद्धान्त है और व्यवहार भी। इसके अतिरिक्त इसमें अंतर्निहित व्यवस्था और सामंजस्य भी है। परन्तु, 'वाद' के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। इसके लिए सिद्धान्त एवं सिद्धांत–तंत्र को नवीन भी होना चाहिए। गाँधी के सिद्धांत में नवीनता एवं विशिष्ट भी है, यद्यपि गाँधी ने विनम्रतावश यह स्वीकार किया है कि उनके विचार में कोई नवीनता नहीं है। सत्य और अहिंसा दोनों पुराने सिद्धांत हैं। लेकिन उन्होंने सत्य और अहिंसा को सचमुच नए आयाम प्रदान किए हैं। उनके सिद्धांत को पुराने सिद्धांतों को पुनरुक्ति नहीं माना जा सकता। इस नवीनता एवं मौलिकता को संत विनोबा भावे एवं आयार्च कृपलानी ने भी स्वीकार किया है।[1]

गांधीवाद की नवीनता को कई दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। यह ठीक है कि अनेक शब्द को पुराने शब्दों में नये अर्थ प्रदान करना गाँधी की अपनी विशेषता है। सत्य, अहिंसा, ईश्वर इत्यादि पुराने शब्द हैं, परन्तु गांधीवाद में इन शब्दों के अर्थ पहले से बिल्कुल बदल गए हैं। 'सत्य' का अर्थ केवल मन, वचन और कर्म की सत्यता ही नहीं है, बल्कि यह ईश्वर सत्ता का भी सूचक है। अहिंसा का अर्थ केवल हत्या अथवा पीड़ा का निषेध नहीं, बल्कि 'प्रेम' भी है, जिसकी अभिव्यक्ति सेवा के माध्यम से होती है। 'ईश्वर' सत्ता तो है ही, परन्तु उसकी पूर्ण अभिव्यक्ति सत्य के रूप में ही होती है।[2] सत्य और अहिंसा की अभिव्यक्ति के लिए भी गाँधी ने पूर्णत; नवीन कला निकली है। प्राचीन ऋषि–मुनियों ने सत्य और अहिंसा को वैयक्तिक उत्थान के लिए आवश्यक धर्म समझा था। परंतु, गाँधी ने इसका क्षेत्र विस्तृत कर दिया है। उनके अनुसार, सत्य और अहिंसा केवल मन की ही स्थिति या आत्मशुद्धि का ही साधन नहीं है, बल्कि इसके द्वारा समाज और राज्य को भी शुद्ध किया जा सकता है। इस प्रकार सत्य और अहिंसा अपनी नवीनता में दिव्य है।[3] सत्य की अनुभूति अहिंसा के द्वारा ही संभव है। हिंसा की जड़ क्रोध स्वार्थपरता, वासना इत्यादि विभाजक, पृथककारी प्रवृत्तियों में से है, इसलिए हिंसा के द्वारा हम सत्य–प्राप्ति ले लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते। हिंसा असत्य है और असत्य का अर्थ है 'वह, जिसका

अस्तित्व नहीं। यदि असत्य ही स्थायी होता और यदि कोई भी वस्तु अपने प्रति और दूसरों के प्रति सत्य न होती, यदि जीवन और प्रकृति के सब नियम अनिश्चित होते और हम उन पर न रह सकते तो यह विश्व विच्छृंखल और अव्यवस्थित हो जाता। लेकिन, हिंसा असत्य क्यों है? एक कारण तो यह है कि मनुष्य–ज्ञात सत्य सदा आंशिक, आपेक्षिक होता है, वह पूर्ण शुद्ध और निरपेक्ष नहीं होता। मनुष्य एक ही वस्तु की ओर भिन्न–भिन्न दृष्टिकोणों से देखता है। सब की अंतरात्मा की आवाज एक ही नहीं होती। कोई मनुष्य इस बात का दावा नहीं कर सकता कि उसकी ही बात निरपेक्ष सत्य है। इसलिए सत्य के शोध में इस बात की गुंजाइश नहीं कि विरोधी के साथ बल–प्रयोग किया जाय; विरोधी की भूल–सुधार का साधन सब्र और सहानुभूति है, उसको कष्ट न देकर स्वयं कष्ट सहना है।[4] गांधीजी के अनुसार, अहिंसा सम्पूर्ण धर्म की जान है। साध्य और साधन एक है, इसलिए अहिंसा स्वयं सत्य है, उसकी आत्मा है, उसका प्रौढ़तम फल है। 'अहिंसा और सत्य इतने ही ओत–प्रोत हैं, जीतने कि सिक्के के दोनों बाजू या चिकनी चकरी के दोनों पहलू।' उनको अलग–अलग करना और यह कि कौन उल्टा और सीधा है बड़ा कठिन है।[5] तब भी अहिंसा साधन है, और सत्य साध्य। इसीलिए, गांधीजी अहिंसा की अपेक्षा सत्य के अधिक पुजारी हैं। वह सत्य के लिए अहिंसा का बलिदान कर सकता हैं, लेकिन सत्य का त्याग किसी भी वस्तु के लिए नहीं कर सकते।[6] गांधीजी के शब्दों में, "बिना सत्य के (शुद्ध) प्रेम नहीं होता, बिना सत्य के वह ऐसा देश–प्रेम हो सकता है जिससे दूसरों को हानि पहुंचे, या एक युवक का एक लड़की के लिए वासनायमय अनिराग हो सकता है; या (सत्य के बिना) अयौक्तिक अंधप्रेम हो सकता है, जैसे अज्ञानी माता–पिता का अपने बच्चे के लिए होता है।"[7] अहिंसा एक निषेधात्मक शब्द है, जिसका अर्थ हिंसा नहीं है। अँग्रेजी में भी इसका समअर्थी शब्द नकारात्मक है; Non-Violence ऐसा लगता है कि शब्द के निर्माताओं ने शब्द की सार्थकता को समझते हुए शब्द को गढ़ा था।[8]

गांधीजी अहिंसा को साधन मानते थे, जिसे एक ही सिक्के के दो पहलुओं के समान लेते थे। गाँधी जी ने 'यंग इंडिया' में लिखा है कि अहिंसा तन की नहीं, मन की स्थिति है। हिंसा का अभाव अहिंसा नहीं है। घृणा का अभाव प्रेम नहीं है। शत्रुता का अभाव मैत्री जैसी भावना में निश्चयात्मक है, भले ही शब्द की व्युत्पत्ति में नकारात्मक है।[9] गांधीजी की मान्यता थी कि हत्या न करना ही अहिंसा नहीं है। हिंसा के और भी घातक रूप हैं जैसे कठोर, बुरी, भावना, क्रोध, घृणा, क्रूरता, द्वेष, अपमान शोषण आदि।[10] वे अहिंसा के निषेधात्मक पहलुओं को पसंद करते थे। किसी जीव की हत्या न करना, अहिंसा का एक छोटा–सा कदम है। वे 'हरिजन' में 1935 में लिखते हैं कि 'अहिंसा का अर्थ, संसार की किसी वस्तु को चोट न पहुँचाना–मनसा–वाचा–कर्मणा।' इसकी और विषद् व्याख्या करते हुए गाँधी जी 'यंग इंडिया' में लिखते हैं कि– किसी को चोट पहुंचाना या यहाँ तक कि हत्या करना हमेशा हिंसा नहीं है। वे कहते हैं कि प्राणी के शरीर को जो असह्य पीड़ा से पीड़ित होता हुआ क्रमशः निश्चित मृत्यु की ओर बढ़ रहा है, नष्ट कर देना अहिंसा है। गाँधी जी लिखते हैं' यदि मेरा बच्चा पागल कुत्ते के काट लेने से बीमार पड़ जाय और उसकी यंत्रणा कम करने का कोई आशाजनक उपाय न हो तो मैं उसकी जान लेना अपना कर्त्तव्य

मानूँगा।'[11] गांधीजी के आश्रम के उस बछड़े का प्रकरण, जिसमें एक बार अपने बछड़े को जहर दिलवा दिया था, क्योंकि उसकी असह्य यंत्रणा लाइलाज थी। इस प्रकार आग की ओर दौड़ते हुए बच्चे को बलपूर्वक रोक लेना और उस बच्चे को जिसे सांप ने काट लिया हो जागते रखने के लिए पीटना अहिंसा के दृष्टांत हैं, बशर्ते कि प्रेरक हेतु क्रोध न हो, बल्कि बच्चे को हानि से बचाने की इच्छा हो।[12] 'यंग इंडिया' में गाँधी ने लिखा है 'अहिंसा वीरों का अस्त्र है, कायरों का नहीं। गलतः निर्भयता एवं आत्मबल के बिना अहिंसा चल नहीं सकती।[13] इसमें प्रतिहिंसा की भावना नहीं, अपितु क्षमा की भावना रहती है। प्रतिहिंसा भी एक प्रकार की दुर्बलता का ही द्योतक है, किन्तु क्षमा वीरों का भूषण है। आत्मबल से युक्त,[14] शक्तिमान व्यक्ति ही क्षमा कर सकता है। इस प्रकार अहिंसा की परम्परागत भावना में गाँधी जी ने वीरता भर दी है। उन्होंने स्पष्ट दिखाया है कि अहिंसक प्रतीकार में हम वस्तुतः हिंसा का प्रतीकार नहीं करते, बल्कि हम दुर्बलता से जूझते हैं। दुर्बल व्यक्ति के लिए धर्म– अधर्म, पाप–पुण्य का कोई अर्थ नहीं है।[15] कायरतापूर्ण शांतिवाद से वीरतापूर्ण कहीं अच्छा है। शक्ति के बिना शांति वस्तुतः शान्ति नहीं, बल्कि पाहले दर्जे की कायरता और आस्था हीनता है।[16] गाँधीजी आजीवन अन्याय का प्रतिकार कराते रहे। उन्होंने कभी भी किसी प्रकार की अनैतिकता के सामने समर्पण नहीं किया।

विश्वयुद्ध की विध्वंसकता की कल्पना मात्र से देह सिहर उठता है। इसी कारण भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने सातवें गुटनिरपेक्ष सम्मेलन के अवसर पर कहा था कि मानव जाति एक ऐसे कगार पर खड़ी है, जहां विश्व की आर्थिक व्यवस्था कभी भी ढह सकती है और नाभिकीय युद्ध की लपटों में मनुष्य जाति के अनेक बार विनाश करने की ताकत रखने वाली महाशक्तियों की जंखोरी की भूख शांत नहीं हुई। अब इसका दायरा धरती से हटकर अंतरिक्ष में पहुँच चुका है। विश्वशान्ति का यह एक महत्वपूर्ण पहलू है, लेकिन विश्वशान्ति की यह आवश्यकता और कई कारणों से महसूस की जाती है। चूंकि शान्ति के वातावरण में ही विश्व–समाज सम्मानपूर्वक जीवन जी सकता है और 'वसुधव कुटुंबकम्' के उद्यात्त विचारों का प्रसार कर सकता है। गाँधी विचार में एक ऐसे विश्व–समाज की कल्पना की गई है, जो सीमा और सरकार से मुक्त हो, एसी कल्पना का आधार शान्ति, प्रेम, सहयोग, करुणा और त्याग है। प्रो. टाएनबी ने कहा था कि अगर हम युद्ध को समाप्त नहीं करते तो यह युद्ध ही हमें समाप्त कर देगा।[17] यही कारण है कि विश्व के आर्थिक–सामाजिक मानवता के पुजारी ही नहीं, विज्ञान और अणुशक्ति के जन्मदाताओं को भी अणुशक्ति की विध्वंसकता को देख चिन्ता–सी हो गयी थी। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति कैनेडी ने कहा था कि अगर मानव युद्ध को खत्म नहीं कर देता है तो युद्ध ही मानव को खत्म कर देगा। हम देखते हैं कि अंत में नेपोलियन को भी शान्ति की चाहत हुई और उसने कहा कि विश्व में तलवार और आध्यात्मिक, वैज्ञानिक एवं नैतिक शक्ति है, लेकिन आगे चलकर तलवार की शक्ति को आध्यात्मिक शक्ति का शरणागत होना पड़ेगा।

गाँधी ने कहा कि प्रेम के कानून के बिना संसार में सच्ची शक्ति कभी संभव नहीं है। शस्त्र के बल पर लोगों को चुप रखा जाता है, किन्तु जब तक सभी के मन में अहिंसा का भाव न हो तो शान्ति की पुकार अरण्यरोदन ही सिद्ध होगी।[18] विनोबा जी ने भी माना है कि सत्य, प्रेम

और करुणा की शक्ति जब व्यापक होगी, तभी दुनिया से दूर होगी।[19] इसलिए मन के परिवर्तन पर उन्होंने काफी बल दिया है। गाँधी का मानना है कि भावना को बदले बिना बाह्य स्वर में परिवर्तन असंभव है। उनका मानना है कि यदि भीतरी भावना अपरिवर्तित रहे तो वह परिवर्तन अवास्तविक नाममात्र का ही होगा। उन्होंने कहा है कि पुटी हुई दिखाई देने वाली कब्र आखिर गल रहे मांस और अस्थियों को ही ढकती है।[20] इसी को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि यदि हमारे प्रेम का आधार दूसरों के प्रति घृणा हो तो वह तनिक सा बोझ पड़ते ही टूट जाएगा। यह प्रेम–रहित शान्ति जैसा है, इसलिए युद्ध तभी बंद होगा, जब मानव की अंतरात्मा इतनी ऊँची उठ जाय कि जीवन के हर क्षेत्र में मानव प्रेम के नियम को ही निर्विवाद रूप से सर्वशक्तिमान स्वीकार कर ले।[21] विश्व के महान लड़ाकू नेपोलियन ने भी स्वीकार किया था कि आत्मबल पशुबल को सदैव जीत लेगा।[22] राष्ट्रवाद का अर्थ लौकिक धर्म से किया जाता। इसलिए, राष्ट्र के निमित्त किया गया जघन्य कार्य भी त्याज्य नहीं माना जाता, बल्कि उसे राष्ट्रभक्ति की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार राष्ट्र के बीच तनातनी बढ़ जाती है। राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के लिए राज्यों में व्यापार, उद्योग, उपनिवेश, सैनिक शक्ति आदि के क्षेत्र में प्रतिद्वंद्विता, प्रतिस्पर्धा तथा होड़ उत्पन्न होती है। आये दिन होने वाले राष्ट्रों के बीच संघर्ष का मूल भी राष्ट्रवाद को ही माना जा सकता है। लेकिन, राष्ट्रवाद के कुछ लाभों को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीवादी प्रवृत्ति के कारण ही साम्राज्यवादी शक्तियाँ परास्त हो सकती हैं। इसने सोये राष्ट्र को जगाया है और देश के लिए मर मिटने की कला सिखायी है। इसने व्यक्ति में त्याग, सेवा, सद्भावना और सहयोग आदि नैतिक प्रतिमान को स्थापित किया है। चार्ल्स श्लेयर और आर्गेन्सी आदि विद्वान राष्ट्रवाद को एकता उत्पन्न करने का शक्ति–स्त्रोत मानते हैं।[23] जबकि अर्नाल्ड टायनवी राष्ट्रवाद को शान्ति एवं समृद्धि का बाधक और मानवता का प्रमुख शत्रु बताते हैं।

राष्ट्रवाद कुछ अर्थों में खतरनाक साबित हो सकता है, लेकिन नैतिक प्रतिमान राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक भी है। इसलिए राष्ट्रीयता के त्याग की आवश्यकता ऐसी होनी चाहिए, जो राष्ट्र के प्रति प्रेम करना सिखाए, लेकिन इनका अंतर्राष्ट्रीय प्रेम से विरोध न हो। इसके लिए भौतिकवादी आकर्षण से मुक्त होकर उदारवाद और शांतिवाद को आदर्श बनाना होगा। महात्मा गाँधी का कहना है कि मेरी देशभक्ति में सामान्यतः सारी मानव जाति का हित समाविष्ट है।[24] उन्होंने इसे स्पष्ट करते हुए कहा है कि राष्ट्रधर्म का अर्थ व्यापक प्रेम है। वह विश्वप्रेम नहीं, अपितु उसका बड़ा भाग है। आगे उन्होंने कहा है कि वह प्रेम धवलगिरी नहीं, प्रेम का दार्जिलिंग है। वहाँ से धवलगिरी की सुवर्ण कांति देती है।[25] इसलिए कहा जा सकता है कि राष्ट्रप्रेम विश्वप्रेम का विरोधी नहीं, बल्कि उसका नमूना है। गाँधी का विश्वास था कि राष्ट्रप्रेम की परिणति ही विश्वप्रेम में होती है। इसलिए, गाँधी राष्ट्रवाद के विरोधी नहीं हैं, वे राष्ट्र से उत्पन्न संकीर्णता, स्वार्थपरता और अलगाव के भाव का विरोध करते हैं, जो एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र को तबाह करने या हानि पहुंचाने के लिए प्रेरित करता है। वर्तमान समय में सभी राष्ट्र शान्ति तथा अहिंसा के पूर्ण अनुयायी बन चुके हैं और संसार में किसी प्रकार का तनाव एवं संघर्ष नहीं है। सत्य तो यह है कि सिद्धांततः शांतिमय अहिंसात्मक मार्ग को उपयोगी तथा उचित मानते हुए भी अधिकतर राष्ट्र

व्यावहारिक क्षेत्र में इसके अनुसार कार्य करने के लिए उद्यत प्रतीत नहीं होते। वे अपने स्वार्थों को मानव जाति के व्यापक हितों की अपेक्षा अधिक महत्व देते हैं और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव तथा संघर्ष का निराकरण करने के लिए वास्तविक प्रयास नहीं करते। अतएव समूची दुनिया का सालाना सैनिक खर्च लगभग 95 हजार करोड़ डॉलर, अर्थात् कोई तीन लाख करोड़ रुपये हैं तथा परमाणु–शक्ति समपन देश विज्ञान के लिए आवंटित राशि का 60 प्रतिशत भाग प्रतिरक्षा तथा अन्तरिक्ष कार्यक्रमों पर खर्च करते है।[26] इसलिए अर्नाल्ड टायनबी ने 'द इमरजिंग वर्ल्ड' में लिख है कि यदि हम युद्ध का अन्त नहीं करेंगे तो युद्ध ही सृष्टि का अन्त कर देगा।

इस सच के बीच स्थिति यह है कि शान्ति और अहिंसा के अनुयायी गाँधी लगातार लोकप्रिय होते गए, सिर्फ हिंदुस्तान में नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व में। आज जहां–जहां जनतंत्र है, वहाँ कि संसदीय बैठकों में नेताओं के बहस–भाषण के दौरान गाँधी का उल्लेख किया जाता है। कई नोबल पुरस्कार विजेता, जिसमें इस वर्ष का शान्ति का नोबल पुरस्कार अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को मिला है, गाँधी एवं शान्ति के पक्षधर रहे हैं। गाँधी कि बढ़ती प्रासंगिकता का अंदाज इस बात से भी लगाया जा सकता है कि दुनिया का शायद ही कोई ऐसा हो, जहाँ गाँधीजी की प्रतिमा न मौजूद हो, अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन और न्यूयार्क में ही गाँधीजी की कई दर्जन प्रतिमाएँ स्थापित हैं। क्या गाँधी की शांति और अहिंसा की बढ़ती प्रासंगिकता के साथ ही दुनिया में हथियारों की होड भी कम हो रही है? परन्तु बहुत अफसोसजनक स्थिति है, उलटे सच्चाई यह है कि हथियारों की होड बढ़ती ही जा रही है। नित्य नये–नये आविश्कार हथियारों के हो रहे हैं। इस सब के बीच विडंबना ही काही जायेगी कि शांति और अहिंसा के अनुयायी गाँधी लगातार लोकप्रिय होते गए। सिर्फ हिंदुस्तान में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में आज जिन देषों में भी लोकतन्त्र है, वहाँ की संसदीय बैठकों के दौरान गाँधी का उल्लेख कहीं–न–कहीं अवश्य आ जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की विभिन्न सभाओं को संबोधित करते हुए पूरी दुनिया के राजनेता गाँधी को उद्धृत करते हैं। एक अनुमान के अनुसार हर दिन 2000 से ज्यादा जगहों पर गाँधी उद्धृत होते हैं। बुद्धिजीवियों के निष्कर्षों में, राजनेताओं के सपनों में, स्कॉलरों के अनुसंधानों में कहाँ गाँधी नहीं उद्धृत होते। गाँधी की लोकप्रियता में लगातार वृद्धि होती जा रही है। हाल ही बी. बी. सी. द्वारा किए गए वृहद् सर्वे में भी यह बात उभरकर सामने आई है कि दुनिया भारत को सिर्फ तीन वजहों से जानती है। एक यहाँ कि गरीबी, दूसरा ताजमहल और तीसरे महात्मा गाँधी। महात्मा गाँधी हिंदुस्तान की पहचान, लोकतंत्र के पर्याय और अहिंसक सपनों की आत्मा बन चुके हैं।[27]

आज यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, एशिया के अनेक देशों में गाँधी विचार का अध्ययन हो रहा है। सब जानते हैं कि हम गोरे हो या काले, इस धर्म के अनुयायी हों या उस धर्म के विकसित हों या विकासशील अथवा अविकासित हर समय परस्पर लड़ते–झगड़ते नहीं रह सकते। वैज्ञानिक आविश्कारों और पारस्परिक प्रतिस्पर्धाओं के चलते छोटे–बड़े देशों की सैन्य शक्ति बढ़ी है, जनसंहारक शस्त्रों की खनखनाहट सुनायी पड़ रही है, सरकारें अपनी केन्द्रित सत्ता सुदृढ़ करने और उद्योगपति बड़े–बड़े कारखाने खोलने में व्यस्त हैं, तब आम आदमी अपनी अस्मिता बचाने के

लिए बैचेन है, जिसकी सबसे अधिक चिंता गाँधी ने की थी।[28]

गाँधीजी ने कहा था– 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।' इसलिए उनका जीवन ही उनका जीवन–दर्शन है। उनका उद्देश्य किसी दर्शन–तंत्र का निर्माण करना नहीं था। शायद उन्हें ऐसा करने की न तो इच्छा थी, और न अवकाश ही। तथापि, उनका जीवन बहुरंगी और उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। आइन्स्टीन ने सच ही कहा था– 'गाँधी इन्सानों में एक चमत्कार था।' वे एक साथ बुद्ध और मुहम्मद की तरह पैगम्बर; वाशिंगटन और गैरीबाल्डी की तरह मुक्तिदाता; सुकरात और कन्फ़्यूसियस की तरह शिक्षक; मार्क्स और सन्तोकनिनों की तरह अर्थशास्त्री और कृष्ण तथा अशोक की तरह राजनेता थे। इसके अलावा वे एक अच्छे प्रकृतिक चिकित्सक, एक सफल पत्रकार और लेखक तथा एक सजग किसान भी थे। जीवन का शायद ही कोई ऐसा पहलू हो, जिसको उन्होंने प्रभावित नहीं किया और अपने साँचे में नहीं ढाला। प्रसिद्ध गांधीवादी चिंतक ठाकुरदास बंग ने लिखा है कि दुनिया में बुद्ध, महावीर, ईसा मसीह, मोहम्मद, नानक आदि अनेक धर्म संस्थापक हो गए। सबकी अपनी–अपनी विशेषता है। बीसवीं सदी में मोहनदास करमचंद गांधी ने शाब्दिक अर्थ में किसी धर्म की स्थापना नहीं की, पर हिंदुस्तान में वह पहला शख्स था जिसने सामुदायिक अहिंसा– धर्म का मार्ग खोजा और उसे प्रशस्त किया। आज की सर्वग्राही हिंसा के जमाने में इस आविष्कार को इतिहास अनन्य मानता है और मानेगा। महात्मा गाँधी के जीवन और चिंतन ने विश्व मानवता को प्रभावित–आलोकित किया है। आज भारत और सम्पूर्ण विश्व अशांति, आतंकवाद, विषमता, बेकारी, भ्रष्टाचार व पर्यावरण असंतुलन आदि संकटों से जूझ रहा है और भूमंडलीय, उदारीकरण, निजीकरन की प्रक्रिया पूरी दुनिया में नित्य नए–नए संकटों को जन्म दे रही है। पूंजीवाद इन संकटों का मुकाबला करने में पूरी तरह विफल साबित हो रहा है। वैश्विक परिदृश्य में शक्ति का संतुलन भी असंतुलित हो गया ऐसी परिस्थिति में विश्व मानवता के प्रत्येक महात्मा गाँधी का चिंतन नए सिरे प्रासंगिक हो उठे है, जिसके विविध पहुलाओं पर समग्रतापूर्वक विचार–विमर्श करने व उसे अपनाने की जरूरत है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Whatever their external from of presentation and expression *(Gandhi's ideas are new and revolutionary;-* Kripalani, J. B. Mahatmaa Gandhi His life and Thought, Government of India Publication, Delhi, 1970, P. **308**
2. देखिए, सिंह, दशरथ; *गांधीवाद को विनोबा की देन,* बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 1975, पृ. **21–22**
3. *Gandhian Outlook and Technque*, (Proceedings of the International Seminar Delhi-Government of India Publication), 1953, p. **160**
4. *यंग इंडिया,* भाग 1. पृ. **36**, *यंग इंडिया* भाग 2, पृ. **11–82,** *'स्पीचेज़'*, पृ. **501** हिन्द स्वराज्य, पृ. **145–46**
5. *'आत्मकथा',* प्रस्तावना, आत्मा–शुद्धि, पृ. **8–9**

6 *हरिजन,* 28.03.1936, पृ. **49**

7 *'स्पीचेज़'* अपेंडिक्स 2, पृ. **503**

8 भट्टाचार्य, प्रभात कुमार, *गाँधी–दर्शन,* जयपुर, कॉलेज बुक डिपो, 1973, पृ. **31**

9 वही, पृ. **32**

10 वही

11 *हरिजन,* 19.12.1936, पृ. **362**, *यंग इंडिया,* भाग–2, पृ **971, 978**

12 *हरिजन,* 6.2.1937, पृ. **414**, हिन्द स्वराज्य, पृ. **138–139**

13 *यंग इंडिया* 4.11.1926

14 *रोला,* रौम्यां; महात्मा गाँधी, पृ. **123**

15 वही, पृ.**127**

16 *यंग इंडिया,* 18.10.1925

17 Prof. Toynbee, See singh, *Ramjee (1983) The relevance of Gandhian Thought,* p. **27**.Classical Publication Company, New Delhi

18 *सम्पूर्ण गाँधी वामड़य,* खंड 31, पृ. **519**

19 भावे, विनोबा (1972); *भूदान गंगा,* पृ. **7**

20 *सम्पूर्ण गाँधी वाड़मय,* खंड 31, पृ. **149**

21 उपरिवत् पृ. **50**

22 *सम्पूर्ण गाँधी वाड़मय,* खंड 39, पृ. **439,** 1971

23 Schlecher, p. Charles, Internation Relation, p. **65-66**, New Delhi

24 *सम्पूर्ण गाँधी वाड़.मय,* खंड 28, पृ. **195**

25 *सम्पूर्ण गाँधी वाड़.मय,* खंड 27, पृ. **316**

26 शर्मा, धीरेंद्र; *जीवन साहित्य,* अप्रैल, पृ. **162**

27 चौधरी, शहीद, ए; लोकमत समाचार, 2 अक्तूबर 2010

28 साधक, शरद कुमार; प्राक्कथन, *नये युग का सूत्रपात,* पृ. **7**